विद्या भारती संकुल संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

मार्च 2024 फाल्गुन - चैत्र। विक्रमी सं. 2080

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा प्रस्ताव - श्रीराममन्दिर से राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ओर

नर्मदांचल सुमंगल संवाद

मनुष्यता का विकास ही मनुष्य का विकास है – डॉ. मोहन भागवत जी

वर्ष प्रतिपदा और भारतीय काल गणना विज्ञान – भारतीय नव वर्ष विशेष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा
रेशिमबाग, नागपुर
फाल्गुन शुक्ल (6-8) युगाब्द 5125 (15-17 मार्च 2024)

प्रस्ताव - श्रीराममन्दिर से राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ओर

रेशिमबाग, नागपुर | पौष शुक्ल द्वादशी, युगाब्द 5125 (22 जनवरी 2024) को श्रीरामजन्मभूमि पर श्रीरामलला के विग्रह की भव्य-दिव्य प्राणप्रतिष्ठा विश्व इतिहास का एक अलौकिक एवं स्वर्णिम पृष्ठ है। हिन्दू समाज के सैकड़ों वर्षों के सतत संघर्ष एवं बलिदान, पूज्य संतों और महापुरुषों के मार्गदर्शन में चले राष्ट्रव्यापी आंदोलन तथा समाज के विभिन्न घटकों के सामूहिक संकल्प के परिणामस्वरुप संघर्षकाल के एक दीर्घ अध्याय का सुखद समाधान हुआ। इस पवित्र दिवस को जीवन में साक्षात् देखने के शुभ अवसर के पीछे शोधकर्ताओं, पुरातत्वविदों, विचारकों, विधिवेत्ताओं, संचार माध्यमों, बलिदानी कारसेवकों सहित आंदोलनरत समस्त हिन्दू समाज तथा शासन-प्रशासन का महत्त्वपूर्ण योगदान विशेष उल्लेखनीय है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस संघर्ष में जीवन अर्पण करनेवाले सभी हुतात्माओं के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उपर्युक्त सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है।

श्रीराममन्दिर में अभिमंत्रित अक्षत वितरण अभियान में समाज के समस्त वर्गों की सक्रिय सहभागिता रही। लाखों रामभक्तों ने सभी नगरों और अधिकांश गाँवों में करोड़ों परिवारों से संपर्क किया। 22 जनवरी 2024 को भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में अद्भुत आयोजन किये गए। गली-गली और गाँव-गाँव में स्वप्रेरणा से निकली शोभायात्राओं, घर-घर में आयोजित दीपोत्सवों तथा लहराती भगवा पताकाओं और मंदिरों-धर्मस्थलों में हुए संकीर्तनों आदि के आयोजनों ने समाज में एक नवीन ऊर्जा का संचार किया।

श्री अयोध्याधाम में प्राणप्रतिष्ठा के दिन देश के धार्मिक, राजनैतिक एवं समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के शीर्ष नेतृत्व तथा सभी मत-पंथ-सम्प्रदाय के पूजनीय संतवृंद की गरिमामयी उपस्थिति थी। यह इस बात की द्योतक है कि श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप समरस, सुगठित राष्ट्रजीवन खड़ा करने का वातावरण बन गया है। यह भारत के पुनरुत्थान के गौरवशाली अध्याय के प्रारंभ का संकेत भी है। श्रीरामजन्मभूमि पर रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से परकीयों के शासन और संघर्षकाल में आई आत्मविश्वास की कमी और आत्मविस्मृति से समाज बाहर आ रहा है। सम्पूर्ण समाज हिंदुत्व के भाव से ओतप्रोत होकर अपने "स्व" को जानने तथा उसके आधार पर जीने के लिए तत्पर हो रहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन हमें सामाजिक दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए समाज व राष्ट्र के लिए त्याग करने की प्रेरणा देता है। उनकी शासन पद्धति "रामराज्य" के नाम से विश्व इतिहास में प्रतिष्ठित हुई, जिसके आदर्श सार्वभौमिक व सार्वकालिक हैं। जीवन मूल्यों का क्षरण, मानवीय संवेदनाओं में आई कमी, विस्तारवाद के कारण बढ़ती हिंसा व क्रूरता आदि चुनौतियों का सामना करने हेतु रामराज्य की संकल्पना सम्पूर्ण विश्व के लिए आज भी अनुकरणीय है।

प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि सम्पूर्ण समाज अपने जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को प्रतिष्ठित करने का संकल्प ले, जिससे राममंदिर के पुनर्निर्माण का उद्देश्य सार्थक होगा। श्रीराम के जीवन मे परिलक्षित त्याग, प्रेम, न्याय, शौर्य, सद्भाव एवं निष्पक्षता आदि धर्म के शाश्वत मूल्यों को आज समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। सभी प्रकार के परस्पर वैमनस्य और भेदों को समाप्त कर समरसता से युक्त पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना ही श्रीराम की वास्तविक आराधना होगी।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा समस्त भारतीयों का आवाहन करती है कि बंधुत्वभाव से युक्त, कर्तव्यनिष्ठ, मूल्याधारित और सामाजिक न्याय की सुनिश्चितता करनेवाले समर्थ भारत का निर्माण करें, जिसके आधार पर वह एक सर्वकल्याणकारी वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर सकेगा।

वैचारिक लेख

वर्ष प्रतिपदा और भारतीय काल गणना विज्ञान
भारतीय नव वर्ष विशेष

भारतीय चिंतन विश्व कल्याण के लिए है और विज्ञान आधारित है। भारतीय त्यौहार, परम्पराएं, विशेष अवसर मानव कल्याण की वैज्ञानिक दृष्टि लिए हुए है। वर्ष प्रतिपदा अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भारतीय नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। भारत में विक्रमी संवत पंचांग अधिक प्रचलन में है। उसी के अनुसार वर्ष प्रतिपदा है। भारत के जितने भी पंचांग है चाहे सृष्टि संवत हो या युगादि सभी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होते हैं। यह गणना पूर्णतः वैज्ञानिक है। इस आलेख में हम भारतीय काल गणना विज्ञान के बारे में जानेंगे।

ज्योतिष में प्रयुक्त काल (समय) के विभिन्न प्रकार :

प्राण (असुकाल) – स्वस्थ मनुष्य सुखासन में बैठकर जितनी देर में श्वास लेता व छोड़ता है, उसे प्राण कहते है।

6 प्राण = 1 पल (1 विनाड़ी)

60 पल = 1 घडी (1 नाडी)

60 घडी = 1 नक्षत्र अहोरात्र (1 दिन रात)

अतः 1 दिन रात = 60 × 60 × 6 प्राण = 21600 प्राण

इसे यदि आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो

1 दिन रात = 24 घंटे = 24 × 60 × 60 = 86400 सेकण्ड्स

अतः 1 प्राण = 86400/21600 = 4 सेकण्ड्स

अतः एक स्वस्थ मनुष्य को सुखासन में बैठकर श्वास लेने और छोड़ने में 4 सेकण्ड्स लगते हैं।

प्राचीन काल में पल का प्रयोग तोलने की इकाई के रूप में भी किया जाता था। 1 पल = 4 तौला (जिस समय में एक विशेष प्रकार के छिद्र द्वारा घटिका यंत्र में चार तौले जल चढ़ता है उसे पल कहते है।)

जितने समय में मनुष्य की पलक गिरती है उसे निमेष कहते हैं।

18 निमेष = 1 काष्ठा

30 काष्ठा = 1 कला = 60 विकला

30 कला = 1 घटिका

2 घटिका = 60 कला = 1 मुहूर्त

30 मुहूर्त = 1 दिन

इस प्रकार १ नक्षत्र दिन = 30 × 2 × 30 × 30 × 18 = 972000 निमेष

उपरोक्त गणना सूर्य सिद्धांत से ली गयी है किन्तु स्कन्द पुराण में इसकी संरचना कुछ भिन्न मिलती है। स्कन्द पुराण के अनुसार –

15 निमेष = 1 काष्ठा

30 काष्ठा = 1 कला

30 कला = 1 मुहूर्त

30 मुहूर्त = 1 दिन रात

1 दिन रात = 30 × 30 × 30 × 15 = 40500 निमेष

यहाँ हम सूर्य सिद्धांत को ज्यादा प्रमाणित मानते हैं क्योंकि वह विशुद्ध ज्योतिष ग्रन्थ है और उसकी गणना भी ज्योतिषी द्वारा ही की गयी है।

1 दिन = 21600 प्राण = 86400 सेकण्ड्स = 972000 निमेष

1 प्राण = 972000/21600 = 45 निमेष

1 सेकंड = 972000/86400 = 11.25 निमेषसौर मास, चन्द्र मास, नाक्षत्रमास और सावन मास – ये ही मास के चार भेद हैं। सौरमास का आरम्भ सूर्य की संक्रांति से होता है। सूर्य की एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति का समय ही सौरमास है। (सूर्य मंडल का केंद्र जिस समय एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, उस समय दूसरी राशि की संक्रांति होती है। एक संक्रांति से दूसरी संक्राति के समय को सौर मास कहते हैं। १२ राशियों के हिसाब से 12 ही सौर मास होते हैं।) यह मास प्रायः तीस-एकतीस दिन का होता है। कभी कभी उनतीस और बत्तीस दिन का भी होता है।

चन्द्रमा की ह्रवास वृद्धि वाले दो पक्षों का जो एक मास होता है, वही चन्द्र मास है। यह दो प्रकार का होता है – शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर अमावस्या को पूर्ण होने वाला 'जमांत' मास मुख्य चंद्रमास है । कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा तक पूरा होने वाला गौण चंद्रमास है । यह तिथि की ह्रवास वृद्धि के अनुसार 29, 28, 27 एवं 30 दिनों का भी हो जाता है ।

सूर्य जब पृथ्वी के पास होता है (जनवरी के प्रारंभ में) तब उसकी कोणीय गति तीव्र होती है और जब पृथ्वी से दूर होता है (जुलाई के आरम्भ में) तब इसकी कोणीय गति मंद होती है। जब कोणीय गति तीव्र होती है तब वह एक राशि शीघ्र पार कर लेता है और सौर मास छोटा होता है, इसके विपरीत जब कोणीय गति मंद होती है तब सौर मास बड़ा होता है।

सौर मास का औसत मान = 30.44 औसत सौर दिन

तिथि – चन्द्रमा आकाश में चक्कर लगाता हुआ जिस समय सूर्य के बहुत पास पहुँच जाता है उस समय अमावस्या होती है। (जब चंद्रमा सूर्य और पृथ्वी के बिलकुल मध्य में स्थित होता है तब वह सूर्य के निकटतम होता है।) अमावस्या के बाद चंद्रमा सूर्य से आगे पूर्व की ओर बढ़ता जाता है और जब 120 कला आगे हो जाता है तब पहली तिथि (प्रथमा) बीतती है। 120 से 240 कला का जब अंतर रहता है तब दूज रहती है।

आगे पढ़ें...

240 से 260 तक जब चंद्रमा सूर्य से आगे रहता है तब तीज रहती है। इसी प्रकार जब अंतर 168˚-180˚ तक होता है तब पूर्णिमा होती है, 180˚-192˚ तक जब चंद्रमा आगे रहता है तब 16वीं तिथि (प्रतिपदा) होती है। 192˚-204˚ तक दूज होती है इत्यादि। पूर्णिमा के बाद चंद्रमा सूर्यास्त से प्रतिदिन कोई 2 घडी (48 मिनट) पीछे निकालता है|

चन्द्र मासों के नाम इस प्रकार हैं – चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष या मृगशिरा, पौष, माघ और फाल्गुन।

देवताओं का एक दिन –

देवताओं का 1 दिन (दिव्य दिन) = 1 सौर वर्ष

दिव्य वर्ष – जैसे 360 सावन दिनों से एक सावन वर्ष की कल्पना की गयी है उसी प्रकार 360 दिव्य दिन का एक दिव्य वर्ष माना गया है। यानी 360 सौर वर्षों का देवताओं का एक वर्ष हुआ।

1200 दिव्य वर्ष = 1 चतुर्युग = 1200 × 360 = 432000 सौर वर्ष

चतुर्युग में सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग होते हैं। चतुर्युग के दसवें भाग का चार गुना सतयुग (40%), तीन गुना (30%) त्रेतायुग, दोगुना (20%) द्वापर युग और एक गुना (10%) कलियुग होता है|

अर्थात् 1 चतुर्युग (महायुग) = 4320000 सौर वर्ष

1 कलियुग = 432000 सौर वर्ष

1 द्वापर युग = 864600 सौर वर्ष

1 त्रेता युग = 1296000 सौर वर्ष

1 सतयुग = 1728000 सौर वर्ष

जैसे एक अहोरात्र में प्रातः और सांय दो संध्या होती हैं उसी प्रकार प्रत्येक युग के आदि में जो संध्या होती है उसे आदि संध्या और अंत में जो संध्या आती है उसे संध्यांश कहते हैं। प्रत्येक युग की दोनों संध्याएँ उसके छठे भाग के बराबर होती हैं इसलिए एक संध्या (संधिकाल) बारहवें भाग के सामान हुई। इसका तात्पर्य यह हुआ कि –

कलियुग की आदि व अंत संध्या = 3600 सौर वर्ष

द्वापर की आदि व अंत संध्या = 72000 सौर वर्ष

त्रेता युग की आदि व अंत संध्या = 108000 सौर वर्ष

सतयुग की आदि व अंत संध्या = 144000 सौर वर्ष

72 चतुर्युगों का एक मन्वंतर होता है, जिसके अंत में सतयुग के समान संध्या होती है। इसी संध्या में जलप्लव् होता है। संधि सहित 14 मन्वन्तरों का एक कल्प होता है, जिसके आदि में भी सतयुग के समान एक संध्या होती है, इसलिए एक कल्प में 14 मन्वंतर और 15 सतयुग के सामान संध्या हुई।

अर्थात् 1 चतुर्युग में 2 संध्या

1 मन्वंतर = 71 × 432000 = 30672000 सौर वर्ष

मन्वंतर के अंत की संध्या = सतयुग की अवधि = 1728000 सौर वर्ष

= 14 × 71 चतुर्युग + 15 सतयुग

= 994 चतुर्युग + (15 × 4)/10 चतुर्युग (चतुर्युग का 40%)

= 1000 चतुर्युग = 1000 × 12000 = 12000000 दिव्य वर्ष

= 1000 × 4320000 = 4320000000 सौर वर्ष

ऐसा मनुस्मृति में भी मिलता है किन्तु आर्यभट्ट की रचना आर्यभटीय के अनुसार

1 कल्प = 14 मनु (मन्वंतर)

1 मनु = 72 चतुर्युग

14 × 72 = 1008 चतुर्युग = 1 कल्प

जबकि सूर्य सिद्धांत से 1000 चतुर्युग = 1 कल्प

जो कि ब्रह्मा के 1 दिन के बराबर है। इतने ही समय की ब्रह्मा की एक रात भी होती है। एक ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष है। जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूर्ण होती है, उतने में भगवान विष्णु का एक निमेष (पालक झपकने का समय) होता है। विष्णु के आगे भगवान शिव का काल है जोकि अनंत है।

इस समय ब्रह्मा की आधी आयु अर्थात् 50 वर्ष बीत चुके है, शेष आधी आयु का यह पहला कल्प है। इस कल्प के संध्या सहित 6 मनु बीत गए हैं और सातवें मनु वैवस्वत के 27 महायुग बीत गए हैं तथा अट्ठाईसवें महायुग का भी सतयुग बीत चुका है।

इस समय कलियुग के 5054 वर्ष बीते हैं।

बीते हुए 6 मन्वन्तरों के नाम हैं – (1) स्वायम्भुव (2) स्वारोचिष (3) औत्तमी (4) तामस (5) रैवत (6) चाक्षुष। वर्तमान मन्वंतर का नाम वैवस्वत है। वर्तमान कल्प को श्वेत कल्प कहते हैं, इसीलिए हमारे संकल्प में कहते हैं –

"प्रवर्तमानस्याद्य ब्राह्मणों द्वितीय प्रहरार्धे श्री श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे ... बौद्धावतारे वर्तमानेस्मिन वर्तमान संवत्सरे अमुकनाम वत्सरे अमुकायने अमुक ऋतु अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे संयुक्त चन्द्रे .... तिथौ ....."

एक सौर वर्ष में 12 सौर मास तथा 365.2585 मध्यम सावन दिन होते हैं परन्तु 12 चंद्रमास 354.36704 मध्यम सावन दिन का होता है, इसलिए 12 चंद्रमासों का एक वर्ष सौर वर्ष से 10.89170 मध्यम सावन दिन छोटा होता है। इसलिए कोई तैंतीस महीने में ये अंतर एक चंद्रमास के समान हो जाता है। जिस सौर वर्ष में यह अंतर 1 चंद्रमास के समान हो जाता है उस सौर वर्ष में 13 चंद्रमास होते हैं। उस मास को अर्धमास कहा जाता है।

आगे पढ़ें...

मैटोनिक चक्र – मिटन ने 433 ई.पू. में देखा कि 235 चंद्रमास और 19 सौर वर्ष अर्थात् 19 X 12 = 228 सौर मासों में समय लगभग समान होता है, इनमें लगभग 1 घंटे का अंतर होता है |

19 सौर वर्ष = 19 × 365.25 = 6939.75 दिवस

235 चन्द्र मास = 235 × 29.531 = 6939.785 दिवसइस प्रकार हम देखते हैं कि प्रत्येक 19 वर्ष में 228 सौर मास और लगभग 235 चन्द्र मास होते हैं अर्थात् 7 चन्द्र मास अधिक होते हैं। चन्द्र और सौर वर्षों का अगर समन्वय नहीं करे तब लगभग 32.5 सौर वर्षों में, 33.5 चन्द्र वर्ष हो जायेंगे। अगर केवल चन्द्र वर्ष से ही चलें तब अगर दीपावली नवम्बर में आती है तब 19 वर्षों में यह 7 मास पहले अर्थात् अप्रैल में आ जाएगी और इन धार्मिक त्यौहारों का ऋतुओं से कोई सम्बन्ध नहीं रह जायेगा। इसलिये भारतीय पंचांग में इसका ख्याल रखा जाता है |

राशिचक्र – सूर्य जिस मार्ग से चलता हुआ आकाश में प्रतीत होता है उसे कान्तिवृत्त कहते हैं। अगर इस कान्तिवृत्त को बारह भागों में बांटा जाये तो हर एक भाग को राशि कहते हैं अतः ऐसा वृत्त जिस पर नौ ग्रह घूमते हुए प्रतीत होते हैं (ज्योतिष में सूर्य को भी ग्रह ही माना गया है) राशीचक्र कहलाता है। इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं की पृथ्वी के पूरे गोल परिपथ को बारह भागों में विभाजित कर

उन भागों में पड़ने वाले आकाशीय पिंडों के प्रभाव के आधार पर पृथ्वी के मार्ग में बारह कि.मी. के पत्थर काल्पनिक रूप से माने गए हैं।

उपरोक्त जानकारी संक्षिप्त है। आशा है भारतीय काल गणना विज्ञान को समझने के लिए सार्थक सिद्ध होगी।

केशव सभागार का लोकार्पण

लखनऊ | 1 मार्च 2024 | उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव श्री दुर्गा शंकर मिश्र, आरएसएस के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख श्री रामलाल और विद्या भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री यतेंद्र शर्मा ने सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में केशव सभागार का लोकार्पण किया। इस अवसर पर विद्या भारती उत्तर पूर्व क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री हेमचंद, प्रदेश निरीक्षक राम सिंह, क्षेत्रीय मंत्री श्री हरेंद्र श्रीवास्तव, विद्यालय के प्रबंधत श्री शैलेश मिश्रा, विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री सचिन गुप्ता आदि उपस्थित रहे। आयोजन में प्रधानाचार्य श्री संतोष कुमार सिंह, आचार्यों और विद्यार्थियों ने विशेष सहयोग किया।

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान की कार्यकारिणी एवं महासमिति बैठक

भारतीय संस्कृति के वाहक बनकर समाज में बढ़ाएं संस्कृति का व्याप: रामकृष्ण राव

22 लाख विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने पढ़ी और जानी भारतीय संस्कृति

कुरुक्षेत्र | 6 मार्च 2024 । विद्या भारती के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण राव ने कहा कि संस्कृति के प्रति निष्ठा बढ़ाने के लिए समाज में बहुत कुछ करना बाकी है। समाज में भारतीय संस्कृति का व्याप बढ़ाने के लिए मंदिरों के ट्रस्टियों व मातृशक्ति का सहयोग लिया जा सकता है। भारतीय संस्कृति के प्रचारक बनकर जो इस क्षेत्र में कार्य कर सकें उनका स्वागत है।

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान की कार्यकारिणी एवं महासमिति की बैठक को संबोधित करते हुए डी. रामकृष्ण राव ने कहा कि संस्कृति के व्याप हेतु समाज में सेवा अभियान की भी आवश्यकता है। इसमें क्षेत्र संयोजक आवश्यक सहयोग दे सकते हैं।

संस्थान के निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह ने कहा कि इसी पावन धरा पर भगवान श्रीकृष्ण ने सबसे पहले पवित्र ग्रंथ गीता में वसुधैव कुटम्बकम् का संदेश दिया। उन्होंने बताया कि इस सत्र में देशभर में लगभग 22 लाख छात्रों एवं अध्यापकों ने भारतीय संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त की। निदेशक ने संस्कृति बोध अभियान, संस्कृति प्रवाह परीक्षा, अखिल भारतीय छात्र एवं आचार्य निबन्ध प्रतियोगिता, प्रकाशन विभाग, साहित्य बिक्री केन्द्र, अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव आदि के बारे में भी जानकारी दी और कहा कि इस वर्ष संस्कृति बोधमाला पुस्तक पुनर्लेखन का कार्य भी किया गया है।

संस्थान के सचिव वासुदेव प्रजापति ने गत वर्ष की बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत की। संस्थान के कोषाध्यक्ष डॉ. ज्वाला प्रसाद ने 1 अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक के आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। सत्र 2024-25 के प्रस्तावित अर्थ संकल्प (बजट) और आगामी वर्ष की कार्य योजना पर विचार किया गया। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी, विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोबिन्द चन्द्र महंत, महामंत्री श्री अवनीश भटनागर, श्री यतीन्द्र शर्मा, संस्कृति बोध परियोजना के विषय संयोजक श्री दुर्ग सिंह राजपुरोहित आदि उपस्थित रहे। बैठक में हरियाणा, पंजाब, पूर्वी एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्य भारत, दिल्ली, राजस्थान, बिहार, झारखंड, केरल, असम, छत्तीसगढ़, कर्नाटक आदि से 35 प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया।

बाल मेला 'कलीमुतम-2024'

6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए बाल मेला 'कलीमुतम-2024'
2 मार्च को श्री सरस्वती विद्यालय किझारूर द्वारा आयोजित

तिरुवनंतपुरम। विद्या भारती की केरल इकाई और भारतीय विद्या निकेतन की तिरुवनंतपुरम जिला समिति के तत्वावधान में श्री सरस्वती विद्यालय कीझारूर में 2 मार्च को 'कलीमुतम-2024' नाम से छह वर्ष तक के बच्चों के लिए बाल मेले का आयोजन किया गया।

मेले में लगभग 2 हजार बच्चों ने भाग लिया। मेले का उद्घाटन तिरुवनंतपुरम जिला पंचायत की स्वास्थ्य शिक्षा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री वीआर सलूजा ने किया।

मेले में विज्ञान प्रयोगशाला, चित्र पुस्तकालय, आर्ट गैलरी, चिड़ियाघर, मॉडल हाउस, उद्यान, आर्ट गैलरी, स्टेज, स्विमिंग पूल, प्रदर्शनी, साहसिक कार्य, स्टेज शो और देशभक्ति गीत आदि का आयोजन किया गया।

आचार्य प्रशिक्षण

रांची। श्रीकृष्ण चंद्र गांधी शैक्षिक नगर, कुदलुम, रांची में 24-25 फरवरी को आचार्य प्रशिक्षण कार्य़शाला का आयोजन किया गया। वहीं, विद्या भारती बिहार की क्षेत्रीय पूर्णकालिक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोबिंद चंद्र महंत ने कहा कि जिस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति जैसी होगी, उस राष्ट्र का विकास भी वैसा ही होगा। इस अवसर पर क्षेत्रीय सचिव श्री नकुल शर्मा, प्रांतीय सचिव एवं तीनों प्रांतों के पूर्णकालिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रांतीय कार्यकारिणी बैठक, बीवीएन परिसर, कालेक्कड़, पलक्कड़

नर्मदांचल सुमंगल संवाद

मनुष्यता का विकास ही मनुष्य का विकास है – डॉ. मोहन भागवत जी

हमारी संस्कृति ने कहा है व्यक्ति का सुख परिवार के सुख से और परिवार का सुख गांव सुखी होने से आता है तथा गांव जनपद के और जनपद राष्ट्र के सुख से सुखी होता है। अतः हम सभी को अपनी परंपरा का महत्व समझ समाज की सकारात्मक ऊर्जा को साथ ले ग्राम विकास और पर्यावरण के कार्य को करना ही होगा। इस अवसर भय्याजी जोशी ने नदी, भूमि और वृक्षों से संवाद की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने संघ से इतर समाज की सज्जन शक्ति द्वारा चलाए जा रहे अच्छे कार्यों की सराहना की।

भोपाल | मध्यभारत प्रांत के बनखेड़ी में आयोजित 'नर्मदांचल सुमंगल संवाद' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने विकास की भारतीय अवधारणा को समझाते हुए कहा कि मनुष्यता का विकास ही मनुष्य का विकास है। केवल आर्थिक साधन और अधिकार प्राप्त कर लेना विकास नहीं कहलाता। भाऊसाहब भुस्कुटे न्यास के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में ग्राम विकास तथा पर्यावरण गतिविधि के चयनित 100 सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सरसंघचालक एवं अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य भय्याजी जोशी ने समग्र ग्राम विकास, गौ संवर्धन, जल तथा पर्यावरण के लिए प्रयासरत संस्थाओं के द्वारा किये जा रहे कार्यों के वृत्तांत को सुना।

ग्राम विकास तथा पर्यावरण गतिविधि के कार्यकर्ताओं के साथ संवाद में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि हमारे देश में हजारों वर्षों से खेती की जा रही है, लेकिन भूमि बंजर नहीं हुई, परंतु आज की पद्धति ने अनेक देशों की खेती उजाड़ दी है।

संस्थाओं ने दी सामाजिक कार्यों की जानकारी

'नर्मदांचल सुमंगल संवाद' में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने सामाजिक कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की। भाऊ साहब भुस्कुटे न्यास ने संस्कार, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार, जैविक कृषि, पर्यावरण, गौ सेवा व संवर्धन आदि क्षेत्रों में किये जा रहे कार्यों तथा 'मेरा गांव मेरा तीर्थ' योजना की विस्तृत जानकारी दी। प्रांत के आदर्श प्रभात ग्राम, जैसे– राजगढ़ जिले के ग्राम झिरी, बासौदा जिले के ग्राम झूकरजोगी तथा दतिया जिले के भरसूला गांव के कार्यों की जानकारी भी सरसंघचालक के सामने प्रस्तुत की गई। इसके साथ ही सामाजिक समिति हरदा एवं सिवनी मालवा की पर्यावरण जैविक कृषि समिति ने अपने स्तर पर किये जा रहे प्रभावी गौ संवर्धन, वृक्षारोपण, स्वरोजगार, जैविक कृषि तथा संस्कार पक्ष पर किये जा रहे कार्यों के बारे में बताया। वहीं, संस्था 'नर्मदा समग्र' ने नदी को जीवमान इकाई मानकर वैज्ञानिक पद्धति से किये जा रहे कार्यों तथा राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक किये गये प्रयासों पर वीडियो प्रस्तुति दी।

प्रचार एवं अखिलेखागार बैठक

अपने संगठन के विचार का प्रचार करें :- निखिलेश महेश्वरी

मध्य भारत | विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त की प्रचार एवं अखिलेखागार की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री भालचंद्र रावले, श्री शशिकांत फड़के, श्री निखिलेश महेश्वरी, डॉ संजय पटवा, डॉ आशीष जोशी आदि उपस्थित रहे।

पुरातन छात्र सम्मेलन

जयपुर | विद्या भारती आदर्श शिक्षा समिति जयपुर द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर चाकसू में पुरातन छात्र सम्मेलन होली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। विधायक श्री रामअवतार बैरवा ने चाकसू क्षेत्र को शिक्षा के साथ संस्कार देने के लिए विद्या भारती के विद्यालय की सराहना की। आदर्श शिक्षा समिति के जिला व्यवस्थापक रामदयाल जी सेन ने संस्कार युक्त शिक्षा, अनुशासन, देशभक्ति और समाज सेवा के क्षेत्र में विद्या मंदिरों की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर महंत राजेंद्र पुरी जी महाराज गणेशपुरी धाम चाकसू, विद्यालय के व्यवथापक श्री घनश्याम बाहेती और 250 से अधिक पूर्व छात्र उपस्थित रहे। पुरातन छात्र टोली में श्री महेश कुमार शर्मा (डूसरी वाले) को संयोजक और श्री दिनेश कुमार शर्मा को सह संयोजक का दायित्व दिया गया। विद्या मंदिर के पूर्व प्रधानाचार्यों और आचार्यों का पूर्व विद्यार्थियों ने सम्मान किया।

प्रांतीय वार्षिक कार्ययोजना बैठक

विद्याभारती के कार्य विकास में मध्यप्रदेश की महत्वपूर्ण भूमिका - श्रीराम आरावकर

मध्य भारत | विद्याभारती मध्य भारत प्रांत की प्रांतीय वार्षिक कार्ययोजना बैठक के उद्घाटन सत्र में विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री आरावकर ने उक्त बात कही। उन्होंने कहा कि समय के साथ हमें अपडेट होना चाहिए। इतिहास से हम सीखते तो हैं ही बल्कि हमें इतिहास बनाना भी पड़ता है, इतिहास गौरवशाली था वर्तमान भी गौरवशाली हो इसकी जिम्मेदारी हमारे कंधों पर है। अपना विद्यालय आदर्श विद्यालय बने इसकी कार्य योजना तैयार हम सबको मिलकर करनी चाहिए। प्रांतीय योजना बैठक के उद्घाटन सत्र में श्री विमल गुप्ता प्रांत प्रचारक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्यभारत प्रांत, श्री भालचंद्र रावले क्षेत्रीय संगठन मंत्री विद्या भारती मध्य क्षेत्र, श्री मोहनलाल गुप्ता अध्यक्ष सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान, श्री बनवारी लाल सक्सेना सचिव भाऊराव देवरस सेवा न्यास, श्री निखिलेश महेश्वरी संगठन मंत्री मध्य भारत प्रांत मंचासीन थे।

सरस्वती शिशु मंदिर(CBSE) आवासीय विद्यालय केदारधाम ग्वालियर में 3 दिन चलने वाली इस प्रांतीय कार्ययोजना बैठक में प्रांत से लगभग 450 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। विभिन्न विषयों पर वर्तमान सत्र की समीक्षा कर आगामी सत्र की कार्य योजना तैयार की। प्रांतीय योजना बैठक के उद्घाटन सत्र के अवसर पर सदन में क्षेत्रीय सचिव विवेक शेंडये, सह संगठन मंत्री विद्याभारती मध्यक्षेत्र डॉ आनंद राव, प्रांतीय सचिव श्री शिरोमणि दुबे अन्य प्रांतीय, क्षेत्रीय पदाधिकारी, पूर्णकालिक, प्रधानाचार्य, प्राचार्य बंधु भगिनी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ रामकुमार भावसार एवं आभार श्री चंद्रहंस पाठक ने किया।

प्रोफेसर डॉ. पी.के. माधवन को राष्ट्रपति से डॉक्टर ऑफ लेटर्स की उपाधि प्राप्त

विद्या भारती के पूर्व अखिल भारतीय अध्यक्ष, प्रोफेसर डॉ. पी.के. माधवन ने 07-03-2024 को नई दिल्ली में भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से डॉक्टर ऑफ लेटर्स (डी. लिट.) की उपाधि प्राप्त की। संस्कृत शिक्षा, भाषा, साहित्य और विभिन्न शास्त्रों के क्षेत्र में डॉ. पी.के.माधवन द्वारा दिए गए कुल योगदान पर विचार करने के बाद, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा अपने पहले दीक्षांत समारोह में उन्हें डिग्री प्रदान की गई। माधवन जी ने विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान में अध्यक्ष विद्यालय समिति, अध्यक्ष केरल राज्य, अध्यक्ष दक्षिण क्षेत्र और राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है।

अखिल भारतीय प्रशिक्षण विभाग बैठक

तेलंगाना | "विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान" की अखिल भारतीय प्रशिक्षण विभाग बैठक का आयोजन शारदा धामम, हैदराबाद, तेलंगाना राज्य में किया गया। यह कार्यक्रम 21 और 22 मार्च 2024 को आयोजित किया गया था। विद्या भारती अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री रामकृष्ण राव गरु, राष्ट्रीय आयोजन सचिव श्री गोबिंद महंत और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने सभा का मार्गदर्शन किया। विद्या भारती दक्षिण मध्य क्षेत्र के अध्यक्ष डॉ. चामरथी उमामहेश्वर राव, क्षेत्र सचिव श्री अयाचितुला लक्ष्मण राव, क्षेत्र के आयोजन सचिव श्री लिंगम सुधाकर रेड्डी ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रणाली महत्वपूर्ण है। वक्ताओं ने शिक्षकों से वर्तमान युग में आने वाले नये परिवर्तनों को समायोजित करते हुए नवाचार जोड़कर आगे बढ़ने की कामना की। अखिल भारतीय प्रशिक्षण विभाग बैठक में तैयार की गई योजना को क्षेत्रीय/मंडल/जिला/संकुल/विद्यालय स्तर तक ले जाया जाएगा। इसके अनुरूप, अखिल भारतीय प्रशिक्षण विभाग बैठक में आगामी अवधि के लिए अपनाई जाने वाली योजना पर चर्चा की गई। देश भर में विद्याभारती की प्रशिक्षण प्रणाली से जुड़े विशेषज्ञों और शिक्षाविदों ने भाग लिया और विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

अभिलेखागर और सीएसआर बैठक

कर्नाटक | अभिलेखागर और सीएसआर बैठक, 10 मार्च 2024 को "यादव स्मृति" बैंगलोर में आयोजित की गई। 51 शिक्षण संस्थानों के 69 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मंच पर अखिल भारतीय प्रमुख श्री प्रदीप कुमार, प्रांत अध्यक्ष श्री परमेश्वर हेगड़े, सचिव श्री वसंत माधव प्रांत अभिलेखागार एवं सीएसआर श्री प्रदीप कुमार तथा श्री अनिल कुमार।

विद्यार्थियों को गर्म कपड़े वितरण कार्यक्रम

सिक्किम | 5 मार्च 2024 को विद्या भारती सिक्किम के अंतर्गत सरस्वती संस्कार केंद्र, उत्तर सिक्किम के सदस्यों ने पूर्व पंचायत श्रीमती मीना लिंबू की उपस्थिति में बैठक की तथा कंबल, गर्म कपड़े आदि का वितरण किया। बैठक में मंगशिला रोड लाइन की स्थानीय जनता ने भाग लिया। मंगशिला टिबुक, रोड लाइन और टिनज़गे से कुल 78 लोग (36 बच्चे, 42 बीमार, वयस्क और वरिष्ठ नागरिक) लाभान्वित हुए। कृष्णा सुब्बा समन्वयक (उत्तर सिक्किम) द्वारा दिया गया। विद्या भारती सिक्किम और संस्कार केंद्र उत्तरी सिक्किम के बारे में संक्षिप्त परिचय और जानकारी दी गई। बैठक का समापन चंद्रा माया लिंबू के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ। (विद्या भारती सिक्किम के अन्तर्गत उत्तर जिले में सरस्वती संस्कार केन्द्र द्वारा सेवा कार्य। इस जिले में अभी विद्यालय नही है। तिब्बत सीमा से लगा जनजातीय क्षेत्र है।) **विद्या भारती सिक्किम अन्तर्गत सरस्वती शिशु निकेतन, लिगंताम, पाकयोग जिला, सिक्किम तिब्बत सीमा क्षेत्र का विद्यालय है । विद्यार्थीयो को गरम कपडा(JACKET) वितरण कार्यक्रम 2 मार्च 2024 को सम्पन्न हुआ।**

तीन विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन

जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख | भारतीय विद्या मंदिर डडवाड़ा के दो विद्यार्थी आशीष सपोलिया और अच्युत महाजन द्वारा एक साथ तीन विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन करने का कार्य सफलतापूर्वक किया गया है। जिसमें उन्होंने एक मॉडल "DIGITAL WAY TO INAUGRATION" बनाया जिसके तहत यह कार्य किया गया। जिसमें बी वी एम अम्फाला, बी वी एम हीरानगर और बी वी एम देशमश नगर रहे। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री विजय नड्डा, संगठन मंत्री उत्तर क्षेत्र रहे। उनके साथ माननीय श्री प्रदीप कुमार- सी एस आर एवं अभिलेखागार प्रमुख, विद्या भारती एवं भारतीय शिक्षा समिति जम्मू कश्मीर के अधिकारी रहे।

प्रांतीय प्रधानाचार्य सम्मेलन

सिवान(उत्तर बिहार)। लोक शिक्षा समिति बिहार के तत्वावधान में महावीर सरस्वती विद्या मंदिर विजयहाता, सिवान में 8 से 11 फरवरी तक प्रधानाचार्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उत्तर बिहार के प्रांत प्रचारक रवि शंकर जी ने कहा कि मैं से हम की यात्रा ही विद्या भारती है। हम गुणवत्तायुक्त कार्य करने वाले हैं। हम निर्माण करने वाले हैं। समाज की आवश्यकता के हिसाब से हम कार्य करते हैं। शिक्षा को ही हमने अपने कार्य का आधार बनाया है। श्रेष्ठ और पवित्र कार्य करने के लिए कार्यकर्ता में श्रेष्ठ गुण चाहिए। स्व अनुशासन व्यक्ति को मैं से हम की ओर ले जाता है। हमारे अंदर अधिकार के साथ-साथ कर्तव्य-बोध का भाव विकसित होना चाहिए। सबको सम्मान देना चाहिए। सेवा और समर्पण का भाव और अधिक बढ़ाना चाहिए।

सिवान की सांसद कविता सिंह ने प्रधानाचार्यों से अटल संकल्प लेने का आग्रह करते हुए कहा कि इसी से हमारा राष्ट्र परम वैभव को प्राप्त करेगा। विद्या भारती के अखिल भारतीय मंत्री श्री किशन वीर सिंह शाक्य ने कहा कि प्रधानाचार्य को अपना मिशन और विजन स्पष्ट होना चाहिए और इसी के अनुरूप कार्य करना चाहिए। बच्चों की अंतर्निहित प्रकृति को निखारना ही शिक्षा है। उत्तर-पूर्व क्षेत्र के सचिव नकुल कुमार शर्मा ने कहा कि ज्ञान पांच प्रकार के हैं। श्रुत ज्ञान, इंद्रिय ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनः पर्याय और केवल्य ज्ञान। शिक्षा का सारा तंत्र भारत से ही प्रारंभ हुआ था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक रामनवमी, विद्या भारती के क्षेत्र संगठन मंत्री श्री ख्यालीराम, संघ के उत्तर बिहार प्रांत के प्रांत प्रचारक श्री रविशंकर, लोक शिक्षा समिति की प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुधा बाला, प्रदेश मंत्री डॉ. सुबोध कुमार, प्रदेश सचिव सचिव श्री रामलाल सिंह आदि ने भी प्रधानाचार्यों का मार्गदर्शन किया। विद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्ष डॉ. रीता कुमारी, विद्यालय के सचिव श्री ओमप्रकाश दूबे, प्रधानाचार्य श्री शंभू शरण तिवारी पूर्व सांसद ओमप्रकाश यादव, सामाजिक कार्यकर्ता श्री ई. प्रमोद कुमार मल्ल, शिक्षाविद् डॉ. गणेश दत्त पाठक, संघ के सारण विभाग कार्यवाह श्री प्रभात रंजन, विभाग प्रचारक श्री रोशन राणा, उत्तर पूर्व क्षेत्र के प्रचार प्रमुख श्री नवीन सिंह परमार, विद्या भारती के सिवान विभाग संयोजक प्रो. रविन्द्र पाठक, प्रांत प्रचार प्रमुख श्री ललन कुमार राय, सह प्रांत प्रचार प्रमुख प्रो. अवधेश शर्मा, लोक शिक्षा समिति बिहार के कार्यकारिणी सदस्य डॉ सत्यनारायण गुप्त व श्री अंकज कुमार आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मध्य प्रदेश | राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने अमरकंटक में सरस्वती जनजातीय संस्कार केंद्र के वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में शामिल हुए और सभी को संबोधित किया।

विद्या भारती के गौरव

सन 2007 के बैच के पूर्व छात्रों द्वारा समाज सेवा

मध्यभारत प्रान्त | सरस्वती विद्या मंदिर हरदा मध्य प्रदेश के सन 2007 के बैच के पूर्व छात्रों द्वारा हरदा फटाका फैक्ट्री में मैं हुए ब्लास्ट से प्रभावित 40 बच्चों को जिला पंचायत सीईओ हरदा की उपस्थिति में स्कूल बैग, टिफिन बॉक्स, कंपास बॉक्स पेन, पेंसिल, रबर, स्केल) आदि एवं जूते एवं लोअर टी-शर्ट भी वितरित किए गए।

श्री रामगोपाल गाड़ोंदिया उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर के पूर्व छात्र भरत ने रचा इतिहास

सुजानगढ़ के भरत ने 160 देशों को पछाड़ा, इंटरनेशनल रिसर्च सेमिनार में इंडिया अव्वल

राष्ट्रीय सब जूनियर बालक कबड्डी प्रतियोगिता में रोहित का चयन

चतरा | इंदुमती टिबड़ेवाल सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल के रोहित शर्मा का चयन 33वां राष्ट्रीय सब जूनियर बालक कबड्डी प्रतियोगिता के लिए हुआ है।

अंकित थपलियाल का उत्तराखडं रणजी क्रिकेट टीम में चयनित

सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज आवास विकास ऋषिकेश में 12th में अध्ययनरत अंकित थपलियाल का उत्तराखडं रणजी क्रिकेट टीम में चयनित।

पूर्व छात्र परिषद के सह संयोजक मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य नियुक्त

कृष्ण चंद्र गांधी मीडिया सेन्टर, सिवान, उत्तर बिहार प्रांत | विद्या भारती विद्यालय, महावीरी सरस्वती विद्या मंदिर सिवान के पूर्व छात्र व विद्या भारती विद्यालय पूर्व छात्र परिषद, उत्तर बिहार प्रांत के सह संयोजक डॉ सुधांशु शेखर त्रिपाठी को बिहार के सुप्रसिद्ध आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, दयानंद आयुर्वेदिक PG मेडिकल कॉलेज सिवान का प्राचार्य नियुक्त किया गया हैं।

विद्या भारती के गौरव

विद्या भारती बैंगलोर (कर्नाटक) के पूर्व छात्र श्री मुरली एम. आर ने मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, दिल्ली से M.Sc.(योगा) में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। श्री मुरली विद्या भारती योग विभाग के प्रशिक्षक भी हैं। श्री मुरली को विद्या भारती परिवार की तरफ से बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

विद्या भारती के पूर्व आचार्य व जिला व्यवस्थापक ने मेहनत कर लगवाई 142 की नौकरी

गोगेलाव के शारीरिक शिक्षक हनुमान सिंह देवड़ा ने जगाई अलख

गांव गोगेलाव | शारीरिक शिक्षक हनुमान सिंह देवड़ा ने जुलाई 1995 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोगेलाव में शारीरिक शिक्षक पद पर जॉनिंग की थी। उसके बाद लगातार प्रयास से लगभग 213 विद्यार्थियों को अलग-अलग सरकारी सेवा में चयन का मौका मिला।

हनुमान सिंह बताते हैं ना रात अच्छी ना दिन देखा लगातार मेहनत करते रहे। गोगेलाव गांव व आसपास के गांव के विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे, उन्होंने हर दिन मैदान हो या पढ़ाई हो विद्यार्थियों को मेहनत करवाते थे। इनके कारण आज गोगेलाव, सिंगड़, बालवा, बिंदास गांव के खिलाड़ियों ने हर क्षेत्र में अपनी योग्यता बताई है। पुलिस, आर्मी, शारीरिक शिक्षक, डॉक्टर, अध्यापक हर क्षेत्र में खिलाड़ियों का चयन हुआ है। देवड़ा ने कहा कि इसके लिए मेहनत स्वयं की जरूरी होती है।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन

जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110065

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net www.vidyabharatisamvad.com

Email : vbabss@yahoo.com | vbsamvad@gmail.com

Contact Us : 91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में ,